प्रख्यापन

"जयशंकर प्रसाद की कहानियों का मूल्यांकन" 'आकाश–दीप' के विशेष संदर्भ में लघु शोध–प्रबंध मेरी मौलिक रचना है जो एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

शोध – छात्रा

(गीता गोपाळ कुणकवळेकर)

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि :

प्राक्कथन

प्राक्कथन

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के कथा सम्राट हैं। प्रसाद की साहित्य के प्रति रूचि ने उन्हें लेखक बनाया है। प्रसाद ने उपन्यास और कथा के साथ–साथ नाटक, निबंध जैसी विविध साहित्यिक विधाओं में साहित्य सृजन किया है। हिंदी साहित्य में प्रसाद का स्थान ऊँचा है। प्रसाद ने हिंदी साहित्य को अपनी अनमोल देन दी है।

विषय चयन –

जब एम्. फिल्. के लिए शोध – विषय चयन का सिलसिला शुरू हुआ तो मैने बहुत–सा साहित्य पढ़ा । और मैने डॉ. आशा मणियार जी से विचार विमर्श कर लघु शोध–प्रबंध के लिए "जयशंकर प्रसाद की कहानियों का मूल्यांकन'' 'आकाश–दीप' के विशेष संदर्भ में विषय का चयन हुआ।

प्रसाद हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकार है। आज तक उनके कहानी साहित्य पर कुछ लोगों ने अध्ययन किया है। उपर्युक्त विषय का चयन करते समय मैने जयशंकर प्रसाद पर किए गए शोध–कार्य की जाँच पड़ताल की।

मुझे इस खोज मे

निम्नलिखीत शोध–कार्यो का पता चला–

१. सर्व प्रथम डॉ. आशा मणियार ने 'जयशंकर प्रसाद की कहानियों मे प्रेमतत्व' विषय पर १८८९ में लघु शोध – प्रबंध, शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्, उपाधिक हेतु प्रस्तुत किया है।

२. डॉ. आशा मणियार ने 'जयशंकर प्रसाद के साहित्य में प्रेमतत्व' विषय पर १९९३ में दिर्घ शोध–प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय की पी. एच्. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

३. बागवान जी. एम्. ने 'आकाश दीप कहानी संग्रह : एक अनुशीलन' विषय पर १९९२ में लघु शोध–प्रबंध, शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

उपर्युक्त शोध–कार्य से अलग और मौलिक अनुसंधान के हेतु मैने अनुसंधान के लिए ''जयशंकर प्रसाद की कहानियों का मूल्यांकन'' 'आकाश दीप' के विशेष संदर्भ में विषय का चयन किया।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए।

१. जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा रहा होगा?

२. जयशंकर प्रसाद के 'आकाश–दीप' की कहानियाँ का केंद्रीय विषय क्या है?

३. जयशंकर प्रसाद के 'आकाश–दीप' कहानियों के कथ्य से क्या पता चलता है?

४. जयशंकर प्रसाद के 'आकाश दीप' कहानियों के पात्रों को किस प्रकार चित्रित किया है ?

५. जयशंकर प्रसाद के 'आकाश दीप' कहानियों में प्रेम, प्रकृति, सौन्दर्य कैसे दिखाया है?

६. जयशंकर प्रसाद के 'आकाश दीप' कहानियों में शिल्प का प्रभाव कैसे नजर आता है?

प्रथम अध्याय – ''जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया है। इसमे उनकी जन्म – तिथि, जन्म–स्थान, माता–पिता, प्रेरणा, रूचि, साहित्य, सृजनारंभ आदि बातों का विवेचन किया है। साथ ही उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को स्पष्ट करके उनके कृतित्व अर्थात् साहित्य संसार के

बारे में संक्षिप्त जानकारी दी है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय – ''विवेच्य कहानियों का वस्तुपरक विवेचन''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य कहानियों का वस्तुपरक विवेचन प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत मे प्राप्त तत्थों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय – '' विवेच्य कहानियों में चित्रित प्रेम, प्रकृति तथा सौंदर्य ''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य कहानियों मे प्रेम के विविध रूप, प्रकृति का चित्रण तथा सौंदर्य का चित्रण आदि का विवेचन प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय – ''विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन किया है। इसमें शिल्प का स्वरूप, शिल्प का महत्व, कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, संवाद, भाषाशैली, देश काल वातावरण, शीर्षक आदी की जानकारी प्रस्तुत की है। विवेच्य कहानियों का शिल्प के आधार पर मूल्यांकन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय – ''कहानी साहित्य में प्रसाद का योगदान''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत प्रसाद का कहानी साहित्य में जो योगदान है उसे स्पष्ट किया है। इसमें पाँच कहानी संग्रह की कहानियों की संक्षिप्त जानकारी दी है। जिसमें 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप' 'आँधी' 'इंद्रजाल' आदि कहानी संग्रह की कहानियों की संक्षिप्त जानकारी है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यो के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

उपसंहार –

उपसंहार के रूप में इस लघु शोध–प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कषों को दिया गया है। अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दे दी है।

लघु शोध–प्रबंध की मौलिकता–

१ जयशंकर प्रसाद लिखित 'आकाश दीप' में निहीत कहानियों का मूल्याकंन को अध्ययन का केंद्र बिंदू मानकर इस लघु शोध –प्रबंध में स्वतंत्र रूप से अनुसंधान पहली बार संपन्न हुआ है।

२. प्रस्तुत लघु शोध – प्रबंध में जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा – जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया है।

३. विवेच्य कहानियों के अंतर्गत मनुष्य जीवन में प्रेम, प्रकृति और सौदर्य का चित्रण किया है।

४. प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध के जरिए विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन किया है।

५. प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध में जयशंकर प्रसाद का कहानी साहित्य में योगदान प्रस्तुत किया है।

ऋणनिर्देश

जीवन में हर कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में किसी–न–किसी प्रकार की सहायता लेनी पड़ती है। प्रस्तुत लघु शोध – प्रबंध की पूति हेतु मेरी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले गुरूजनों एवं सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

सर्व प्रथम मै डॉ. आशा मणियार जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। उन्हीं की प्रेरणा एवं निर्देशन के फलस्वरूप मेरा यह कार्य पूरा हुआ है। मै अपना सौभाग्य समझती हू कि वह मुझे निर्देशिका के रूप में मिली। उनका स्नेह, समय – समय पर किए गए सही निर्देशन, मेरे लिए अपना कीमती वक्त देना इसके लिए मैं उनकी ऋणी हूँ। लघु शोध – प्रबंध का कार्य पूरा करते वक्त कभी भी उन्हो ने मुझे निराश नहीं किया। साथ ही उनके परिवारवालों के सहयोग के लिए मै उनकी भी आभारी हूँ। हिंदी विभाग की अध्यक्षा गुरूवर्य डॉ. पद्मा पाटील जी ने भी मझे इस कार्य के लिए प्रोत्साहित किया, जिनके कारण मुझे जयशंकर प्रसाद जैसे लेखक के जीवन और साहित्य को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। अंत: मै उनकी भी ऋणी हूँ। हिंदी विभाग के क्लर्क मंगेश कोळेकर सर के सहयोग के लिए भी मै उनकी आभारी हूँ। इस लघु शोध–प्रबंध की पूर्ति के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति स. का. पाटील सिंधुदुर्ग महाविद्यालय, मालवण के ग्रंथपाल प्रा. पारधी सर एवं कर्मचारीयों के सहयोग से संभव हो सका। अंत: उनके प्रति भी मै कृतज्ञ हूँ।

मेरे माता–पिता के अपार कष्ट, माँ का स्नेह, प्रेरणादायी संस्कार मुझे इस दहलीज तक ले आए हैं। आगे बढ़ने की प्रेरणा मुझे मेरी माँ ने दी है। अंत: मै उनकी आजन्म ऋणी रहूँगी। मेरे पति विलास ने भी मुझे इस कार्य को पूरा करने के लिए साथ दिया है। उनके प्रति भी मै कतृज्ञता व्यक्त करती हूँ।

मेरे कालेज के प्रा. काटकर सर, डॉ. मंडले सर, प्रा. कांबळी मॅडम, प्रा. सामंत मॅडम इन्होंने भी मुझे शोध–कार्य के लिए प्रेरणा दी इसलिए मै उनकी भी आभारी हू। साथ ही समय–समय पर मूझे प्रा. शिंदे सर ने भी अपना कीमती वक्त निकाल कर सहायता की इसलिए मैं उनकी भी ऋणी हूँ। प्रा. टाकळे सर की भी मै ऋणी हूँ इन्होने भी मुझे सहायता की।

इस लघु शोध–प्रबंध का आकर्षित तथा यशोचित टंकण करनेवाले सुधीर भिसाजी कांदळगांवकर के प्रति भी मै कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

इस काय्र की पूर्ति के लिए प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग देने वाले सभी गुरूजनों, सहयोगी और हितचिंतकों के प्रति मै पुनः कृतज्ञता व्यक्त करके इस लघु शोध–प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानो के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर । शोध छात्रा

तिथी :

(गीता गोपाळ कुणकवळेकर)

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय – "जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व" पृ. क्र. १–२४

प्रस्तावना

१.१ व्यक्तित्व

१.१.१ जन्म

१.१.२ परिवार

१.१.३ शिक्षा

१.१.४ विवाह

१.१.५ संतान

१.१.६ साहित्यिक प्रेरणा

१.१.७ पठन–पाठन

१.१.८ साहित्य सृजनारंभ

१.२ जयशंकर प्रसाद का कृतित्व

१.२.१ कहानीकार

१.२.२ उपन्यासकार

१.२.३ निबंधकार

१.२.४ आलोचनाकार

१.२.५ नाटककार

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय– ''विवेच्य कहानियों का वस्तुपरक विवेचन'' पृ. क्र. २५–५०

प्रस्तावना

२.१ जयशंकर प्रसाद के 'आकाश–दीप' में निहित कहानियों का विवेचन वस्तुपरक

२.१.१ आकाश दीप

२.१.२ ममता

२.१.३ स्वर्ग के खंडहर में

२.१.४ सुनहला साँप

२.१.५ हिमालय का पथिक

२.१.६ भिखारिन

२.१.७ प्रतिध्वनि

२.१.८ कला

२.१.९ देवदासी

२.१.१० समुद्र–संतरण

२.१.११ वैरागी

२.१.१२ बनजारा

२.१.१३ चुडीवाली

२.१.१४ अपराधी

२.१.१५ प्रणय–चिहन्

२.१.१६ रूप की छाया

२.१.१७ ज्योतिष्मती

२.१.१८ रमला

२.१.१९ बिसाती

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय–''विवेच्य कहानियों में चित्रित प्रेम, प्रकृति तथा सौदर्य''

पृ. क्र.५१–७९

३.१ प्रेम का स्वरूप

३.२ मनुष्य जीवन में प्रेम का महत्व

३.३ विवेच्य कहानियों में चित्रित प्रेम के विविध रूप

३.३.१ प्रथम दृष्टि प्रेम

३.३.२ सफल प्रेम

३.३.३ अफल प्रेम

३.३.४ अलौकिक प्रेम

३.३.५ त्याग–समर्पण पूर्ण प्रेम

३.३.६ एक पक्षीय प्रेम

३.३.७ शारीरिक प्रेम

३.३.८ वेश्याप्रेम

३.३.९ आदर्श कोटि का प्रेम

३.३.१० देश तथा संस्कृति प्रेम

निष्कर्ष

प्रकृति

प्रस्तावना

३.४ जयशंकर प्रसाद के 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह में प्रकृति

निष्कर्ष

सौंदर्य

प्रस्तावना

३.५ जयशंकर प्रसाद के 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह में सौदंर्य

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय – ''विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन'' पृ.क्र. ८०–१२९

४.१ शिल्प

४.१.१ शिल्प का स्वरूप

४.१.२ शिल्प का महत्व

४.२ कहानी में कथावस्तु का महत्व

४.२.१ कथावस्तु की प्रधानता तथा अनिवार्यता

४.२.२ विवेच्य कहानियों की कथावस्तु

४.३ पात्र एवं चरित्र – चित्रण

प्रस्तावना

४.३.१ चरित्र – चित्रण का स्वरूप

४.३.२ कहानी में चरित्र–चित्रण का महत्व

४.३.३ प्रमुख पुरूष पात्र

४.३.४ प्रमुख नारी पात्र

४.३.५ विवेच्य कहानियों में गौण पुरूष – नारी पात्र

४.४ कथोपकथन

४.४.१ कथोपकथन का महत्व

४.४.२ चरित्र–चित्रण में सहायक कथोपकथन

४.५ देश, काल तथा वातावरण का मूल्यांकन

४.५.१ परिवेश के गुण

४.५.२ परिवेश के भेद

४.५.३ परिवेश का महत्त्व

४.५.४ विवेच्य कहानियों के परिवेश का मूल्यांकन

४.५.४.१ प्राकृतिक परिवेश

४.५.४.२ उदासी का वातावरण

४.६ भाषा

४.६.१ भाषा के गुण

४.६.२ कहानी में भाषा के विविध रूप

४.६.३ भाषा का महत्व

४.६.४ विवेच्य कहानियों मे भाषा का मूल्यांकन

४.६.४.१ द्विरूक्त शब्द

४.६.४.२ व्यंग्यात्मक वाक्य

४.६.२ शैली

४.६.२.१ शैली का स्वरूप

४.६.२.२ शैली क गुण

४.६.२.३ शैली के भेद

४.६.२.४ आत्मकथात्मक शैली

४.६.२.५ कथात्मक शैली

४.६.२.६ पूर्वदीप्ति शैली

४.६.२.७ स्वप्न शैली

४.७ शीर्षक

४.७.१ शीषर्क का महत्व

निष्कर्ष

पंचम अध्याय –

''कहानी साहित्य में प्रसाद का योगदान'' पृ.क्र. १३०–१५५

प्रस्तावना

५.१ कहानीकार प्रसाद

५.१.१ आकाश–दीप

५.१.२ आँधी

५.१.३ इन्द्रजाल

५.१.४ प्रतिध्वनि

५.१.५ छाया

निष्कर्ष

उपसंहार पृ.क्र. १५६–१६३

संदर्भ ग्रंथ सूची पृ.क्र. १६४–१६७